This question paper contains 24 printed pages]

459 to 462

M.A. (Final) Examination, 2022

Hindi Literature

Paper–V

विशेष लेखक (1) तुलसीदास

अथवा

विशेष लेखक (2) प्रेमचन्द

अथवा

हिन्दी नाटक और रंगमंच (3)

अथवा

विशेष लेखक (4) जयशंकर प्रसाद

Time Allowed : Three Hours

Maximum Marks : 100

This question paper contains ***three*** *sections as under :*

Section-A **खण्ड 'अ'** ***Max. Marks-10***

इस खण्ड में एक अनिवार्य प्रश्न है जिसमें ***10*** *भाग हैं। प्रत्येक भाग का उत्तर लगभग* ***20*** *शब्दों से अधिक न हो।* ***सभी*** *प्रश्नों के अंक समान हैं।*

Section-B **खण्ड 'ब'** ***Max. Marks-50***

इस खण्ड में ***10*** *प्रश्न हैं। प्रत्येक इकाई से* ***एक*** *प्रश्न का चयन करते हुए कुल* ***5*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर* ***250*** *शब्दों से अधिक न हो।* ***सभी*** *प्रश्नों के अंक समान हैं।*

Section-C **खण्ड 'स'** ***Max. Marks-40***

इस खण्ड में ***4*** *प्रश्न हैं, प्रश्न के उपभाग हो सकते हैं। इस खण्ड में एक इकाई से अधिकतम* ***एक*** *प्रश्न होगा। प्रश्न संख्या* ***12*** *(इस खण्ड का प्रथम प्रश्न) अनिवार्य होगा। शेष* ***3*** *प्रश्नों में से* ***1*** *प्रश्न का उत्तर दिया जाना है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर* ***500*** *शब्दों से अधिक न हो।* ***सभी*** *प्रश्नों के अंक समान हैं।*

https://pyqlelo.com

खण्ड-अ

1. **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(*i*) 'रामचरितमानस' के काण्डों का नामोल्लेख क्रमानुसार कीजिए।

(*ii*) रामचरितमानस में सबसे अधिक साहित्यिक काण्ड कौनसा है?

(*iii*) सुन्दरकाण्ड की महिमा किन बातों को लेकर है?

(*iv*) तुलसीदास ने कौनसी रचना 'कलिकाल' से मुक्ति पाने के लिए लिखी?

(*v*) तुलसीदास की 'गीतावली' किस कवि की रचना से प्रभावित है?

(*vi*) 'गीतावली' की रचना किस भाषा में हुई है?

(*vii*) 'कवितावली' की रचना किस शैली में हुई है? लिखिए।

(*viii*) तुलसीदास द्वारा ब्रजभाषा में रचित किन्हीं चार ग्रंथों के नाम लिखिए।

(*ix*) तुलसीदास के किस काव्यग्रंथ में शान्त रस की प्रधानता है?

(*x*) तुलसी की 'विनयपत्रिका' में वर्णित पदों की भावदशा क्या है?

खण्ड-ब

प्रत्येक इकाई से **एक** प्रश्न कीजिए–

इकाई-I

2. निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

सुनत सुमंगल बैन, मन प्रमोद तन पुलक भर।
सरद सरोरुह नैन, तुलसी भरे सनेह जल॥
बहुरि सोच बस भे सियर बनू। कारन कवन भारत आगवनू॥
एक आइ अस कहा बहोरी। सेन संग चतुरंग न थोरी ॥
सो सुनि रामहि भा अति सोचू। इत पितु बद्ध इत बंधु संकोचू।
भरत सुभाउ समुझि मन माहीं। प्रभु चितहित थिति पावत नाहीं॥
समाधान तब भा यह जाने। भरत कहे महुँ साधु सयाने॥
लखन लखेउ प्रभु हृदयँ स्वभारू। कहत समय सम नीति बिचारू॥
बिनु पूछें कछु कहउँ गोसाईं। सेवकु समय न ढीढ दिढ़ाई॥
तुम्ह सर्वग्य सिरोमनि स्वामी। आपनि समुझि कहउँ अनुगामी॥

3. "अयोध्याकाण्ड रामचरितमानस का हृदय और केन्द्र बिन्दु है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

इकाई-II

4. तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।

तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग॥

प्रविसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा॥

गरल सुधा रिपु करहि मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई॥

गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही। राम कृपा करि चितवा जाही॥

अति लघु रूप धरेउ हनुमाना। पैठा नगर सुमिरि भगवाना॥

मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा। देखे जहँ तहँ अगनित जोधा॥

गयउ दसानन मंदिर माहीं। अति विचित्र कहि जात सो नाहीं॥

सयन किएँ देखा कपि तेही। मंदिर महुँ न दीखि वैदेही॥

भवन एक पुनि दीख सुहावा। हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा॥

5. सुन्दरकाण्ड में वर्णित विभीषण एवं हनुमान की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

इकाई-III

6. लाभ कहा मानुष-तनु पाए।

काय-बचन-मन सपनेहुँ कबहुँक घटत न काज पराये॥

जो सुख सुरपुर नरक गेह बन आवत बिनहिं बुलाये।

तेहि सुख कहँ बहु जतन करत मन, समझत नहिं समुझाये॥

पर-दारा, पर-द्रोह, मोहबस किये मूढ़, मन भाये।

गरभबास दुखरासि जातना तीव्र विपति बिसराये॥

भय, निद्रा, मैथुन, अहार सबके समान जग जाये।

सुर-दुरलभ तनु धरि न भजे हरि मद अभिमान गँवाये॥

गई न निज-पर-बुद्धि सुद्ध ह्वै रहे न राज-लय लाये।

तुलसीदास यह अवसर बीते का पुनि के पछिताये॥

7. 'विनयपत्रिका' के नामकरण की सार्थकता सिद्ध करते हुए इस ग्रंथ के उद्देश्य को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

इकाई-IV

8. आगम वेद पुरान बखानत मारथ कौटिक जाहि न जाने।

जे मुनि ते पुनि आपुहि आप को ईस कहावत सिद्ध सयाने।

धर्म सबै कलि काल ग्रसे, जप जोग बिराय लै जीव पराने।

की करि सोच मरै, 'तुलसी' हम जानकीनाथ के हाथ बिकाने।

9. ''कवितावली सुन्दर-व्यंग्यों की मंजूषा है।'' स्पष्ट कीजिए।

इकाई-V

10. बिलोके दूरि तें दोउ बीर।

उर आयत, आजानु सुभग भुज स्यामल-गौर सरीर॥

सीस जटा सहसीरुह लोचन, बने परिधन मुनिचीर।

निकट निषङ्ग, संग सिय सोभित, करनि धुनत धनु-तीर॥

मन अगहुँड, तनु पुलक सिथिल भयो, नलिन नयन भरे नीर॥

गड़त गोड़ मानो सकुच-पंक महँ कढ़त प्रेम-बल धीर॥

तुलसीदास दसा देखि भरत की उठि धाए अतिहि अधीर।

लिए उठाइ उर लाइ कृपानिधि बिरह-जनित हरि-पीर॥

11. 'गीतावली' के उत्तरकाण्ड में वर्णित प्रसंगों से स्पष्ट कीजिए कि तुलसीदास ने किस रामराज्य की कल्पना की है?

खण्ड-स

12. "रामचरितमानस में लोकमंगल की भक्तिमूलक पुष्टि हुई है।" इस कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

13. "तुलसी की 'विनयपत्रिका' उत्कृष्ट गीतिकाव्य है।" सिद्ध कीजिए।

14. गीतावली की रचना का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

15. गोस्वामी तुलसीदास कृत 'कवितावली' के रचना विधान एवं काव्य-शिल्प पर लेख लिखिए।

विशेष लेखक (2) प्रेमचन्द

खण्ड-अ

1. **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(*i*) 'सेवासदन' उपन्यास का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(*ii*) 'सेवासदन' उपन्यास में साम्प्रदायिक ईर्ष्या का सटीक वर्णन किन शब्दों में हुआ है?

(*iii*) दीन दयाल की पुत्री को सबसे प्रिय वस्तु क्या थी?

(*iv*) रमानाथ को रमेश बाबू ने कैसे समझाया?

(*v*) 'नशा' शीर्षक कहानी का कथ्य संक्षेप में बताइए।

(*vi*) मिरजा और सज्जाद अली को किसका नशा था?

(*vii*) एक प्रगतिशील साहित्यकार की भावना क्या है? बताइए।

(*viii*) "हमें अपने साहित्य का मापदण्ड ऊँचा करना होगा"– प्रेमचन्द के इस कथन का क्या आधार है?

(*ix*) 'रंगभूमि' उपन्यास के आधार पर रचनाकार की विचार-धारा क्या है और किस पात्र में निरूपित हुई है?

(*x*) 'रंगभूमि' उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता पर लिखिए।

खण्ड-ब

इकाई-I

प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए–

2. "विवाह एक धार्मिक व्रत है, एक आत्मिक प्रतिज्ञा है, जब हम गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते हैं, जब हमारे पैरों में धर्म की बेड़ी पड़ती है, जब हम सांसारिक कर्त्तव्य के सामने अपने सिर को झुका देते हैं। जब जीवन का भार और उसकी चिंताएँ हमारे सिर पड़ती हैं, तो ऐसे पवित्र संस्कार पर हमको गाम्भीर्य से काम लेना चाहिए। यह कितनी निर्दयता है कि जिस समय हमारा आत्मीय युवक ऐसे कठिन व्रत धारण कर रहा हो, उस समय हम आनंदोत्सव मनाने बैठें। वह गुरुतर भार से दब जाता हो और हम नाच-रंगों में मस्त हों।"

3. "हमने वेश्याओं को शहर के बाहर रखने का प्रस्ताव इसलिए नहीं किया कि हमें उनसे घृणा है। हमें उनसे घृणा करने का

https://www.uokonline.com

कोई अधिकार नहीं है। यह उनके साथ घोर अन्याय होगा। यह हमारी ही कुवासनाएँ, हमारे ही सामाजिक अत्याचार, हमारी ही कुप्रथाएँ हैं जिन्होंने वेश्याओं का रूप धारण किया। यह दाल मण्डी हमारे ही जीवन का कलुषित प्रतिबिम्ब, हमारे ही पैशाचिक अधर्म का साक्षात स्वरूप है। हम किस मुँह से उनसे घृणा करें। उनकी अवस्था बहुत शोचनीय है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम उन्हें सुमार्ग पर लाएँ, उनके जीवन को सुधारें और यह तभी हो सकता है, जब वे शहर से बाहर दुर्व्यसनों से दूरे रहें। हमारे सामाजिक दुराचार अग्नि के समान हैं, और ये अभागिन रमणियाँ तृण के समान।"

इकाई-II

"आप एक युवती को किसी युवक के साथ एकांत में विचरते देखकर दांतों उंगली दबाते हैं। आपका अंत:करण इतना मलिन हो गया है कि स्त्री-पुरुष को एक जगह देखकर आप संदेह किए बिना रह ही नहीं सकते, पर जहाँ लड़के और लड़कियाँ एक साथ शिक्षा पाते हैं, वहाँ यह जाति-भेद बहुत महत्त्व की वस्तु नहीं रह जाती। आपस में स्नेह और सहानुभूति की इतनी बातें पैदा हो जाती हैं कि कामुकता का अंश बहुत थोड़ा रह जाता है। यह समझ लीजिए कि जिस देश में स्त्रियों की जितनी अधिक स्वाधीनता है, वह देश उतना ही सभ्य है।"

5. "जब तुम सुराज का नाम लेते हो, तो उसका कौनसा रूप तुम्हारी आँखों के सामने आता है? तुम भी बड़ी-बड़ी तलब लोगे, तुम भी अंग्रेजों की तरह बंगलों में रहोगे, पहाड़ों की हवा खाओगे, अंग्रेजी ठाठ बनाए घूमोगे, इस सुराज से देश का क्या कल्याण होगा? तुम्हारी और तुम्हारे भाई-बंदों की जिंदगी भले आराम और ठाठ से गुजरे पर देस का तो कोई भला न होगा। बस, बगलें झांकने लगे। तुम दिन में पाँच बेर खाना चाहते हो, और वह भी बढ़िया माल, गरीब किसान को एक जून सूखा चबेना भी नहीं मिलता। उसी का रक्त चूसकर तो सरकार तुम्हें हुद्दे देती है।"

इकाई-III

6. "मैं तो खेल में रोता हूँ। कितनी बुरी बात है। लड़के भी खेल में रोना बुरा समझते हैं, रोने वाले को चिढ़ाते हैं, और मैं खेल में रोता हूँ। सच्चे खिलाड़ी कभी नहीं रोते, बाजी पर बाजी हारते हैं, चोट पर चोट खाते हैं, धक्के पर धक्के सहते हैं, पर मैदान में डटे रहते हैं, उनकी त्यौरियों पर बल नहीं पड़ते। हिम्मत उनका साथ नहीं छोड़ती, दिल पर मालिन्य के छींटे भी नहीं आते, न किसी से जलते हैं, न चिढ़ते हैं। खेल में रोना कैसा है? खेल हंसने के लिए, दिल बहलाने के लिए हैं, रोने के लिए नहीं।"

7. "विशेषज्ञों में एक संकीर्णता होती है, जो उनकी दृष्टि को सीमित रखती है। वह किसी विषय पर स्वाधीन होकर विस्तीर्ण दृष्टि नहीं डाल सकते, नियम, सिद्धान्त और परम्परागत व्यवहार उनकी दृष्टि को फैलने नहीं देते। वैद्य प्रत्येक रोग की औषधि ग्रंथों में खोजता है, वह केवल निदान का दास है, लक्षणों का गुलाम, वह यह नहीं जानता कि कितने ही रोगों की औषधि लुकमान के पास भी नहीं थी। सहज बुद्धि यदि अगर सूक्ष्मदर्शी नहीं होती तो संकुचित भी नहीं होती। वह हर एक विषय पर व्यापक रीति से विचार कर सकती है, जरा-जरा सी बातों में उलझकर नहीं रह जाती। यही कारण है कि मंत्री भवन में बैठा हुआ सेना-मन्त्री सेनापति पर शासन करता है।

इकाई-IV

8. प्रेमचन्द ने 'कफन' कहानी में मानवीय दुर्बलताओं एवं कुप्रवृत्तियों का चित्रण किया है। विवेचन कीजिए।

9. मुंशी प्रेमचन्द रचित 'ठाकुर का कुआँ' कहानी जातिगत विषमता को उजागर करती है। विवेचन कीजिए।

इकाई-V

10. प्रेमचन्द के अनुसार आदर्शोन्मुख यथार्थवाद क्या है? साहित्य में किस तरह परिलक्षित होता है?

11. जीवन में साहित्य का स्थान क्या है? प्रेमचन्द के निबन्ध के आधार पर प्रकाश डालिए।

खण्ड-स

12. जालपा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

13. 'रंगभूमि' नामक उपन्यास के आधार पर उपन्यासकार की गांधीवादी विचारधारा पर मत प्रतिपादन कीजिए।

14. प्रेमचन्द की कहानी कला निबन्ध के आधार पर कहानी और उपन्यास में अन्तर पर प्रकाश डालिए।

15. 'राष्ट्रभाषा और हिन्दी एवं हिन्दी की समस्या से सम्बन्धित प्रेमचन्द के विचार आज भी प्रासंगिक हैं' पर अपने शब्दों में लिखिए।

(3) हिन्दी नाटक और रंगमंच

खण्ड-अ

1. **सभी** प्रश्न करने अनिवार्य हैं—

   (*i*) भारतेंदु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित किन्हीं **दो** अनूदित नाटकों के नाम लिखिए।

   (*ii*) 'अंधेर नगरी' नामक नाटक के किन्हीं **दो** पात्रों के नाम लिखिए।

   (*iii*) 'अजातशत्रु' नाटक में कुल कितने अंक हैं?

(*iv*) 'अजातशत्रु' नाटक की घटना प्रमुख रूप से किन स्थानों पर घटित होती है?

(*v*) "मुझे कई बार लगता था कि मैं एक घर में नहीं, चिड़ियाघर के एक पिंजरे में रहती हूँ।" 'आधे-अधूरे' में किस पात्र का कथन है?

(*vi*) 'आधे-अधूरे' का पात्र अशोक सावित्री की किस बात का विरोधी है?

(*vii*) 'आठवाँ सर्ग' के नाटककार सुरेन्द्र वर्मा के किन्हीं अन्य **दो** नाटकों के नाम लिखिए।

(*viii*) 'आठवाँ सर्ग' नाटक किस रचना पर आधारित है?

(*ix*) भीष्म साहनी का जन्म कब और कहाँ हुआ?

(*x*) 'हानूश' नाटक किस देश की घटना पर आधारित है?

खण्ड-ब

इकाई-I

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

अन्धेर नगरी अनबूझ राजा। टका सेर भाजी टाका सेर खाजा॥
नीच ऊँच सब एकहि ऐसे। जैसे भंडुए पण्डित तैसे॥
कुल मरजाद न मान बड़ाई। सबै एक से लोग-लुगाई॥
जात पाँत पूछे नहि कोई। हरि को भजै सो हरि का होई॥
बेश्या जोरू एक समाना। बकरी गऊ एक करि जाना॥

साँचे मारे मारे डोलें। छली दुष्ट सिर चढ़ि चढ़ि बोलें॥

प्रगट सभ्य अन्तर छलधारी। सोई राजसभा बल भारी॥

अथवा

3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

जात लें जात, टके सेर जात। एक टका दो, हम अभी अपनी जात बेचते हैं। टके के वास्ते ब्राह्मण से धोबी हो जायें और धोबी को ब्राह्मण कर दें, टके के वास्ते जैसी कहो वैसी व्यवस्था दें। टके के वास्ते झूठ को सच करें। टके के वास्ते ब्राह्मण से मुसलमान, टके के वास्ते हिन्दू से क्रिस्तान। टके के वास्ते धर्म्म और प्रतिष्ठा दोनों बेचें, टके के वास्ते झूठी गवाही दें। टके के वास्ते पाप को पुण्य मानें, टके के वास्ते नीच को भी पितामह बनावें। वेद धर्म कुल-मरजादा सचाई-बड़ाई सब टके सेर। लुटाय दिया अनमोल माल। ले टके सेर।

इकाई-II

4. 'अजातशत्रु' नाटक की कथावस्तु का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

अथवा

5. 'अजातशत्रु' नाटक की पात्र योजना का वैशिष्ट्य वर्णित कीजिए।

इकाई-III

6. सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

और उस भरोसे का नतीजा? कि अपने आप पर उसे कभी किसी चीज़ के लिए भरोसा नहीं रहा। जिंदगी में हर चीज़ की कसौटी-जुनेजा। जो जुनेजा सोचता है, जो जुनेजा चाहता है, जो जुनेजा करता है, वही उसे भी सोचना है, वही उसे भी चाहना है, वही उसे भी करना है। क्यों? क्योंकि जुनेजा तो एक पूरा आदमी है अपने में। और वह खुद? वह खुद एक पूरे आदमी का आधा-चौथाई भी नहीं है।

अथवा

7. सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

न सही ! पर मैं बिना पूछे भी बता सकता हूँ कि क्या बात हुई होगी। तुमने कहा तुम बहुत-बहुत दुखी हो आज। उसने कहा उसे बहुत-बहुत हमदर्दी है तुमसे। तुमने कहा तुम जैसे भी हो अब इस घर से छुटकारा पा लेना चाहती हो। उसने कहा कितना अच्छा होता अगर इस नतीजे पर तुम कुछ साल पहले पहुँच सकी होतीं। तुमने कहा जो तब नहीं हुआ, वह अब तो हो ही सकता है। उसने कहा वह चाहता है हो सकता, पर आज इसमें बहुत सी उलझनें सामने हैं–बच्चों की जिंदगी को लेकर, इसको-उसको लेकर फिर यह भी कि इस नौकरी में उसका मन नहीं लग रहा, पता नहीं कब छोड़ दे, इसलिए अपने को लेकर भी उसका कुछ तय नहीं है इस समय। तुम गुमसुम होकर

https://pyqlelo.com

सुनती रहीं और रूमाल से आँखें पोंछती रहीं। आखिर उसने कहा कि तुम्हें देर हो रही है, अब लौट चलना चाहिए। तुम चुपचाप उठकर उसके साथ गाड़ी में आ बैठीं।

इकाई-IV

8. सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

आर्य सौमित्र ने बहुत ऊँचे स्वर में कहा कि सर्ग अश्लील नहीं है। पति-पत्नी के पारस्परिक सम्बन्ध भी कहीं अश्लील होते हैं? अश्लीलता आरोप करने वालों की दृष्टियों में है, उनकी आँखों में है, उनके मन में है। इसके बाद नई पीढ़ी के आठ-दस रचनाकार खड़े हुए और बोले कि इस पुरानी पीढ़ी को काव्य की समझ ही क्या है? इनकी साहित्यिक चेतना तो वाल्मीकीय रामायण तक ही सीमित है। इन कट्टर पुराणपंथियों का हस्तक्षेप हम किसी भी प्रकार सहन नहीं करेंगे।

अथवा

9. सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

तुम कुमारसम्भव में से उमा और महादेव के नाम निकाल दो और मैं देखता हूँ कि किसमें इतनी हिम्मत है, जो आठवें सर्ग पर अश्लीलता की उँगली उठाए ! मैं भरे चौराहे पर उसके हाथ कटवा दूँगा, उसकी आँखें निकलवा दूँगा, उसे शूली पर चढ़वा दूँगा। पर आज जो स्थिति है, उसमें मैं कुछ नहीं कर सकता।

मैं बिलकुल असहाय हूँ, मेरे हाथ बँधे हुए हैं, क्योंकि आरोप लगाने वालों के शरीरों पर धर्म का अभेद कवच है। (चषक भरता है। उसे लिये हुए गवाक्ष तक पहुँचता है। धीरे-धीरे घूँट लेता हुआ चिन्तामग्न-सा खड़ा रहता है।) एक रास्ता मुझे सूझा है। (मुड़कर) क्या यह नहीं हो सकता कि आठवाँ सर्ग प्रारम्भ होने पर तुम एक पंक्ति में यह लिख दो कि विवाह के बाद उमा और महादेव के यहाँ यथासमय कार्तिकेय का जन्म हुआ और वह सारी विलास-क्रीड़ा हटा दो?

इकाई-V

10. "अपने यथार्थवादी ढांचे में यह नाटक हानूश जैसे चरित्र की सृष्टि के कारण महत्त्वपूर्ण है, जिसमें जय-पराजय, आशा-निराशा और क्रूर नियति के प्रति गहरा आक्रोश है।" भीष्म साहनी द्वारा रचित 'हानूश' नाटक के सन्दर्भ में इस कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

11. "हानूश नाटक सूक्ष्म-स्तर पर मानवीय स्थिति, मानवीय नियति को प्रस्तुत करता है।" इस कथन के आलोक में अपने विचार अभिव्यक्त कीजिए।

खण्ड-स

12. "अंधेर नगरी में भारतेन्दु ने उस समय की राज-व्यवस्था, उच्चवर्गों की खुशामदी, जातिप्रथा की आलोचना की है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

13. 'आधे-अधूरे' नाटक की प्रमुख स्त्री पात्र सावित्री का चरित्र-चित्रण कीजिए।

14. 'आठवाँ सर्ग' नाटक का वैशिष्ट्य वर्णित कीजिए।

15. 'हानूश' नाटक की कथावस्तु का विवेचन कीजिए।

विशेष लेखक (4) जयशंकर प्रसाद

खण्ड-अ

1. **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(*i*) कामायनी के प्रथम चार सर्गों के नाम लिखिए।

(*ii*) "क्या कहती हो ठहरो नारी! संकल्प अश्रु-जल से अपने-
तुम दान कर चुकी पहले ही जीवन के सोने-से सपने।
उपर्युक्त पंक्तियाँ कामायनी के किस सर्ग से ली गई हैं ?

(*iii*) 'चन्द्रगुप्त' नाटक के नारी पात्रों के नाम लिखिए।

(*iv*) 'चन्द्रगुप्त' नाटक कितने अंकों में विभाजित है?

(*v*) 'काव्य कला तथा अन्य निबन्ध' में प्रसाद जी का महत्वपूर्ण संदेश है।

(*vi*) जयशंकर प्रसाद के 'रंगमंच' सम्बन्धी विचार लिखिए।

https://www.uokonline.com

(*vii*) जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित अधूरा उपन्यास का नाम लिखिए।

(*viii*) 'कंकाल' उपन्यास के किन्हीं दो पात्रों के नाम लिखिए।

(*ix*) 'आकश दीप' कहानी-संग्रह में कुल कितनी कहानियाँ हैं?

(*x*) 'देवदासी' कहानी की मूल संवेदना लिखिए।

खण्ड-ब

इकाई-I

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

मैं जभी तोलने का करती उपचार स्वयं तुल जाती हूँ,
भुजलता फँसाकर नर तरु से झूले सी झोंके खाती हूँ।
इस अर्पण में कुछ और नहीं केवल उत्सर्ग छलकता है।
मैं दे दूँ और न फिर कुछ लूँ, इतना ही सरल झलकता है।

अथवा

3. था एक पूजता देह दीन
दूसरा अपूर्ण अहंता में अपने को समझ रहा प्रवीण।

दोनों का हठ था दुर्निवार, दोनों ही थे विश्वास-हीन।

फिर क्यों न तर्क को शस्त्रों से वे सिद्ध करें-क्यों हो न युद्ध।

उनका संघर्ष चला अशांत वे भाव रहे अब तक विरुद्ध।

मुझमें ममत्वमय आत्म-मोह स्वातंत्र्यमयी उच्छृंखलता।

वह पूर्व द्वन्द्व परिवर्तित हो मुझको बना रहा अधिक दीन।

इकाई-II

4. मानव कब दानव से भी दुर्दांत, पशु से भी बर्बर और पत्थर से भी कठोर-करुणा के लिए निरवकाश हृदय वाला हो जाएगा, नहीं जाना जा सकता। अतीत सुखों के लिए सोच क्यों, अनागत भविष्य के लिए भय क्यों और वर्तमान को मैं अपने अनुकूल बना ही लूँगा, फिर चिंता किस बात की?

अथवा

5. 'चन्द्रगुप्त' नाटक में देश-प्रेम की भावना और राष्ट्रीय चेतना पर प्रकाश डालिए।

इकाई-III

6. कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश-विदेश की सुंदरी के बाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी, तब हिन्दी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया। रीतिकालीन प्रचलित परम्परा

से-जिसमें बाह्य वर्णन की प्रधानता थी-इस ढंग की कविताओं में भिन्न प्रकार के भावों की नये ढंग से अभिव्यक्ति हुई है। ये नवीन भाव आन्तरिक स्पर्श से पुलकित थे। आभ्यंतर सूक्ष्म भावों की प्रेरणा बाह्य स्थूल आकार में भी कुछ विचित्रता उत्पन्न करती है।

अथवा

7. जयशंकर प्रसाद के 'रहस्यवाद' निबन्ध का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

इकाई-IV

8. सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

किशोरी के मुख पर लज्जा की लाली थी, वह अपनी वयस की नाप-तोल से संकुचित हो रही थी। परन्तु तपस्वी का विचलित हृदय इसे व्रीड़ा समझने लगा। वह जैसे लड़खड़ाने लगा। सहसा सम्हल कर बोला-अच्छा। तुमने यहाँ आकर अच्छा नहीं किया। जाओ मेरे मठ में आना-अभी दो दिन ठहरकर। यह एकान्त योगियों की स्थली है, यहाँ से चली जाओ। तपस्वी अपने भीतर किसी से लड़ रहा था।

अथवा

9. 'कंकाल' उपन्यास में जयशंकर प्रसाद ने युगीन यथार्थ को सफलता-पूर्वक अभिव्यक्त किया है। इस कथन की संक्षेप में विवेचना कीजिए।

इकाई-V

10. सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

वही स्वर्ग तो नरक है, जहाँ प्रियजन से विच्छेद है। वही रात प्रलय की है, जिसकी कालिमा में विरह का संयोग है। वह यौवन निष्फल है, जिसका हृदयवान उपासक नहीं है। वह मदिरा हलाहल है, पाप है, जो उन मधुर अधरों की उच्छिष्ट नहीं। वह प्रणय विषाक्त छुरी है, जिसमें कपट है। इसलिए हे जीवन, तू स्वप्न न देख, विस्मृति की निद्रा में सो जा। सुषुप्ति यदि आनन्द नहीं तो दुखों का अभाव तो है। इस जागरण से इस आकांक्षा और अभाव के जागरण से-वह निर्द्वन्द्व सोना कहीं अच्छा है मेरे जीवन!"

अथवा

11. कहानी के तत्वों के आधार पर 'ज्योतिष्मती' कहानी की समीक्षा कीजिए।

खण्ड-स

12. "यदि श्रद्धा और मनु अर्थात् मनन के सहयोग से मानवता का विकास रूपक है तो वह बड़ा भावमय और श्लाघ्य है।" इस कथन के आधार पर कामायनी के रूपकत्व पर विचार कीजिए।

13. 'चन्द्रगुप्त' नाटक के नारी पात्र पुरुष पात्रों की अपेक्षा अधिक प्रभावी हैं। इस कथन को स्पष्ट करते हुए सुवासिनी की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

14. जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित निबन्धों के आधार पर प्रसाद जी की निबन्ध-कला की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

15. 'आकश दीप' कहानी-संग्रह में संकलित प्रसाद जी की 'भिखारिन' कहानी की मूल संवेदना बताते हुए प्रसाद की कहानी-कला की विशेषताएँ लिखिए।

https://www.uokonline.com
Whatsapp @ 9300930012
Send your old paper & get 10/-
अपने पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से